

तो अब तुम मास्टर बनोगे ?

प्रकाश पांडे ने भी देश के तमाम शिक्षकों की तरह समाज द्वारा किए गए उन्हीं सवालों का सामना किया कि अच्छा 'तो अब तुम मास्टर बनोगे?' उन्होंने इन सवालों का जवाब उसी उपलब्ध बजट में अपने स्कूल को बेहतर बनाकर दिया जिसके कम होने का रोना अक्सर सुनाई देता है...



प्रकाश पांडे
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भड़ाभुड़िया, खटीमा

उत्तराखण्ड में खटीमा के करीब एक गांव है भड़ाभुड़िया। यह गांव इन दिनों यहां के स्कूल में हो रहे प्रयासों के लिए जाना जाता है। प्रकाश पांडे उन युवा शिक्षकों में से हैं जिनसे भविष्य के लिए उम्मीद रोशन होती है। प्रकाश ने प्राइमरी शिक्षक बनने का सपना बचपन से आंखों में पाला हो ऐसा भी नहीं है। लेकिन जब वे इस रास्ते पर चले तो उन्हें एहसास हुआ कि जिन्दगी के इस रंग से तो वो अब तक अपरिचित ही थे। वो कभी किसी बात की शिकायत नहीं करते। जो संसाधन और बजट उन्हें स्कूल के लिए मिलता है, उसी में उन्होंने स्कूल के लिए एलसीडी, वॉटर फिल्टर, खेल का

तराखण्ड में खटीमा के करीब एक गांव है भड़भुड़िया। यह गांव इन दिनों यहां के स्कूल में हो रहे प्रयासों के लिए जाना जाता है। प्रकाश पांडे उन युवा शिक्षकों में से हैं जिनसे भविष्य के लिए उम्मीद रोशन होती है। प्रकाश ने प्राइमरी शिक्षक बनने का सपना बचपन से आंखों में पाला हो ऐसा भी नहीं है। लेकिन जब वे इस रास्ते पर चले तो उन्हें एहसास हुआ कि जिन्दगी के इस रंग से तो वो अब तक अपरिचित ही थे। वो कभी किसी बात की शिकायत नहीं करते। जो संसाधन और बजट उन्हें स्कूल के लिए मिलता है, उसी में उन्होंने स्कूल के लिए एलसीडी, वॉटर फिल्टर, खेल का सामान और बेहतर खाने का इंतजाम किया हुआ है। स्कूल में शत-प्रतिशत नामांकन है और प्रकाश का समुदाय से जो खूबसूरत रिश्ता है वो तो देखते ही बनता है।

‘तो अब तुम मास्टर बनोगे?’

‘इस सवाल ने जाने कितने लोगों को शिक्षक होने से रोका होगा। या न जाने कितनों के उत्साह पर पानी फेरा होगा। यह हमारे ही देश में होता है कि प्राइमरी शिक्षक से प्रमोट होकर प्रिंसिपल बनते हैं या आगे के ओहदों पर जाते हैं जबकि दूसरे देशों में तो प्रमोट करके प्राइमरी टीचर बनाया जाता है। यह तो ज्यादा जिम्मेदारी भरा और ज्यादा महत्वपूर्ण काम है।’ युवा शिक्षक प्रकाश पांडे जब यह बात कह रहे थे तो उनके भीतर चल रही ढेर सारी उथल-पुथल भी बयान हो रही थी।

प्रकाश नई पीढ़ी के शिक्षक हैं। उन्हें देखकर ‘थ्री इंडियट्स’ का रैंचो-फुनसुकवांगडू याद आता है जो बड़ा साइंटिस्ट है लेकिन चुपचाप दूर किसी गांव में बच्चों को पढ़ाने का सुख ले रहा है। क्योंकि यही उसका जुनून था। विज्ञान के नये-नये फार्मूले बच्चों के लिए खेल हैं। किताबें ऊब से नहीं, जीवन से भरी हैं। जिंदगी जैसे यहां खुलकर सांस ले रही हो।

प्रकाश शुरू से प्राइमरी अध्यापक नहीं बनना चाहते थे। उन्होंने भी समाज के देखे हुए सपनों में ही खुद को खंगाला था। पीसीएस की तैयारी की, पीसीएस जे की तैयारी की, लेक्चरर होना चाहा। सफलता थोड़ी-थोड़ी दूर से लौटती रही। एक दिन बीटीसी का फॉर्म भर दिया। प्राइमरी टीचर हो



गये। तथाकथित भद्र समाज का पहला चुभता हुआ सवाल यही था, 'तो अब तुम मास्टर बनोगे?' प्रकाश ने बुझे मन से इस पेशे में पांव रखा। बस एक रोजगार की चाहत लिए। लेकिन इस दुनिया में पांव रखते ही उनकी जिंदगी मुस्कुरा उठी। हमारे भीतर हमारी ही न जाने कितनी

संभावनाएं दम तोड़ती रहती हैं, ऐसे ही मौकों पर हमें यह बात समझ में आती है। लेकिन ऐसे मौके हमारी जिंदगी में कितने आते हैं, कैसे आते हैं यह भी गौर करने वाली बात है। अक्सर हम खुद अपनी जिंदगी के नये मौकों के आगे ताला डालकर बैठ जाते हैं।

प्रकाश बताते हैं कि 'भले ही मैंने कभी प्राइमरी का अध्यापक बनने के बारे में न सोचा हो, भले ही मैंने बेमन से इस दुनिया में कदम रखा हो लेकिन सच मानिए आज लगता है कि इससे बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता था। बच्चों के साथ होता हूं तो जिंदगी के वो सारे गिले-शिकवे बहुत दूर ही जाते हैं, सार्थक जिंदगी की एक राह मिली है।'

प्रकाश उत्तराखण्ड के एक सुदूरवर्ती गांव भड़भुड़िया में अध्यापक हैं। उधमसिंह नगर से जब हम सुबह इस स्कूल के लिए निकले थे तो सत्तर किलोमीटर का रास्ता बहुत लंबा लग रहा था लेकिन इस गांव के इस स्कूल में आकर ऐसा लगा कि बदलाव का जो रास्ता यहां के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, बच्चे, समुदाय के लोग, अभिभावक,

भोजनमाता सब मिलकर तय कर रहे हैं वो तो बहुत लंबा है।

67 बच्चों वाले इस स्कूल की खासियत यह है कि यहां सब पहली पीढ़ी के बच्चे हैं। उनके माता पिता या तो मजदूर हैं या किसान। काफी लोग विस्थापित हैं। दूसरी खास बात यह है कि यहां बच्चों की उपस्थिति सौ प्रतिशत होती है। और तीसरी खास बात यह है कि यहां सब खुश रहते हैं। प्रधानाध्यापक कृष्ण लाल से लेकर भोजनमाता तक सब उत्साह से भरे हुए। उसी सरकारी बजट में जिसके अक्सर कम होना का रोना रोया जाता है इस स्कूल में एलसीडी है, कंप्यूटर है जिस पर बच्चों को फिल्में दिखाई जाती हैं, छोटी सी लाइब्रेरी है, पीने के साफ पानी के लिए वाटर फिल्टर हैं। प्रकाश कहते हैं कि बच्चे स्कूल आते समय बहुत खुश होते हैं और जाते समय उदास। वो समय से पहले ही स्कूल आ जाते हैं... खेलते हैं... काम करते हैं। छुट्टियां न बच्चों को पसंद हैं, न टीचर्स को क्योंकि यहां सबका मन लगता है।

वो बताते हैं यह बेहद खूबसूरत दुनिया है... कितना कुछ है यहां करने को। कितना सुकून है कुछ कर पाने का, बच्चों के साथ इकसार हो पाने का। मुझे लगता है इस प्रोफेशन की सुंदरतम चीजों से हम अनभिज्ञ ही रहते हैं। अच्छाई बुराई तो हर पेशे में होती है लेकिन यहां जो है वो अद्भुत है। एक पूरी पीढ़ी हमारी ओर उम्मीद से देख रही है। हमारा पढ़ा-लिखा, सोचा-समझा, इनके साथ मिलकर निखरता है। बच्चों की खिलखिलाहटें हमारे अंदर की सारी कड़वाहट, अवसाद को पोंछ देती हैं। प्रकाश इस स्कूल की सफलता का श्रेय पूरे स्टाफ को देते हुए खुद को विनम्रता से अलग कर लेते हैं। स्कूल के प्रिंसिपल हों या भोजनमाता प्रकाश सबके पीछे खड़े होते हैं शायद इसीलिए वे समय से काफी आगे खड़े नज़र आते हैं। एक क्लास में जाती हूं तो सारे बच्चे एक लय में उठते हैं और एक स्वर भी उठता है गुड मॉर्निंग मैम... 'क्या आप मुझे अपनी क्लास में आने देंगे? मुझे भी आपके साथ पढ़ना है,' मैं कहती हूं तो बच्चे संकोच के साथ

